थी, केवल कल्पना ही प्रतीत होती है

<u>अशोक की विजय</u> —— अशोक के प्रारंभिक शासन के सम्बंध में हमें किसी प्रकार की जानकारी नहीं मिलती है जो कुछ सूचनायें हमें इसके सम्बंध में मिलती है उससे पता चलता है कि अशोक ने अपने शासन काल के १२ वें वर्षों तक अपने पूर्वजों की ही तरह शासन किया। इसने विदेशों के साथ सम्बंध बनाये रखकर अपने राज्य का विस्तार किया। विदेशों में अपना राजदूत उसने भेजा तथा विदेशों से आये राजदूतों का स्वागत किया। भारत के अन्य राजाओं की तरह उसका राजनैतिक आदर्श दिग्विजय था। फलतः उसने जो देश भारत के अधीन नहीं थे उन पर आक्रमण की योजना बनाई।

(1) काश्मीर विजय —— कल्हण की "राजतरंगिणी" से पता चलता है कि अशोक ने

प्राप्त हुई। अपनी राजनीति को अशोक ने धर्म की धुरी पर आधारित किया। इसने बौद्ध धर्म को अपनाया क्योंकि इसकी प्रमुख विशेषता अहिंसा थी। बौद्ध धर्म का इसने अपने देश तथा विदेशों में भी काफी प्रचार कराया। विदेशों में बौद्ध धर्म का प्रचार होने के कारण भारतीय सभ्यता तथा संस्कृति का प्रचार विदेशों में भी होने लगा।

यद्यपि कलिंग युद्ध के बाद अशोक बौद्ध हो गया था लेकिन फिर भी अन्य धर्मों के प्रति इसकी असहिष्णुता नहीं थी। इसने देवों और ब्राह्मणों का भी सत्कार किया। लेकिन इसका अर्थ यह नहीं है कि अशोक ने विभिन्न धर्मावलम्बियों को पूर्ण रूप से स्वतंत्रता प्रदान की थी। उस समय की प्रचलित उपाधियों में कुछ ऐसी उपाधियाँ भी थीं जिनसे अशोक को घृणा थी और वह उन्हें समाप्त

करना चाहता था।

शासन में सुधार — अशोक के मानसिक परिवर्तन का प्रभाव उसकी राजनीतिक स्थिति पर भी पड़ा। कलिंग युद्ध के पूर्व वह साम्राज्यवादी नीतियों का पोषक था लेकिन इसके पश्चात उसने इस नीति का परित्याग करके धर्म विजय की नीति को अपनाया। सम्राट होने के कारण वह अपने को पृथ्वी के समस्त जीवों का शुभ चिन्तक मानने लगा। अशोक के मंगल कार्यों के फलस्वरूप स्वेच्छाचारी और निरंकुश मौर्य साम्राज्य का अंत हो गया। उसका स्थान एक मंगलकारी राज्य ने ले लिया। अपने पूर्वजों द्वारा बनाये गये शासन विधानों में अशोक को आवश्यक संशोधन करना पड़ा।

विदेश नीति — कलिंग युद्ध से प्रभावित होकर अशोक ने अपनी विदेश नीति में भी परिवर्तन किया। उसने अपनी विजय

नीति का त्याग कर दिया। इसने अपने छोटे छोटे पड़ोसी राज्यों को सुरक्षा प्रदान की। अपने पुत्रों और पौत्रों को भी उसने विजय नीति का त्याग करने का आदेश दिया। उसका कहना था— "भेरी घोष" "धर्म घोष" का रूप धारण कर चुका है। मेरे शस्त्रों की खड़खड़ाहट धर्म में खो गई है।" विभिन्न देशों के साथ इसका सम्बंध मित्रता पूर्ण था। अशोक की नीति परिवर्तन से इतिहास में कुछ समय के लिए युद्ध का अंत हो गया।

कलिंग युद्ध के पश्चात अशोक का चरित्र —

कलिंग युद्ध के बाद अशोक के चरित्र का अध्ययन विभिन्न दृष्टिकोणों से किया जा सकता है —

(1) व्यक्ति के रूप में — कलिंग युद्ध के पूर्व ~~बाद~~ अशोक का जीवन आमोद, प्रमोद तथा विलासिता पूर्ण था। युद्ध, हिंसा, रक्तपात से

भी उसे नफरत नहीं थी। सम्भवतः अपने जीवन के प्रारम्भिक समय में वह एक क्रूर शासक था। उन दिनों वह "चण्डाशोक" के नाम से जाना जाता था। कलिंग युद्ध के पश्चात अशोक के जीवन ने एक नया मोड़ लिया। उसने बौद्ध धर्म को अपनाया। वह अहिंसा का पुजारी बन गया। उसका ध्यान प्रजा की भलाई की ओर गया। प्रजा की भलाई के लिए उसने भरसक प्रयास किया।

(२) भिक्षु तथा धर्म प्रचारक के रूप में — प्रारम्भ में अशोक ब्राह्मण धर्मावलम्बी था। यज्ञ, दान आदि से उसे कोई लगाव नहीं था। कलिंग युद्ध के बाद वह बौद्ध धर्मावलम्बी बन गया। बौद्ध धर्म का उसने काफी प्रचार किया। उसने अनेक मठों और स्तूपों का निर्माण कराया और उन्हें

सहायता प्रदान की। प्रजा के पथ प्रदर्शन के लिए उसने अपने आदेश स्तम्भों और शिलाओं पर खुदवाये। प्रजा के आचरण की देखभाल के लिए उसने धर्ममहामात्रों की नियुक्ति, पालि भाषा में बौद्ध ग्रंथों का अनुवाद कराया। इस प्रकार अशोक बौद्ध धर्म का अनुयायी, प्रचारक तथा भिक्षु अपने लक्ष्य में उसे पूर्ण सफलता प्राप्त हुई थी अशोक की उपाधियां "देवानांप्रिय" "विरुद" तथा "पियदर्शी" उसकी इस सफलता की पुष्टि करती है।

(3) शासक के रूप में —— अशोक ने अपनी प्रजा की भलाई की ओर भी काफी ध्यान दिया उसने अपने राज्य में ऐसी व्यवस्था की थी जिसमें छोटे बड़े अमीर गरीब सभी को समान न्याय प्राप्त हो सके। वह हर समय प्रजा की शिकायतों को सुनता उसने प्रजा की भौतिक, नैतिक एवं आध्यात्मिक उन्नति की ओर भी ध्यान

किया। प्रजा की सुख सुविधा के लिए वह सदा चिन्तित रहता था। देश में शांति और सुव्यवस्था बनाये रखने की उसने पूरी व्यवस्था की थी। यात्रा की सुविधा के लिए उसने सड़कों का निर्माण कराया, सड़कों के किनारे वृक्ष लगवाये, धर्मशालाओं का निर्माण कराया तथा जगह जगह पर कुंओं का निर्माण कराया। प्रजा की शिक्षा के लिए उसने अनेक पाठशालायें भी खुलवायी। अनेक दानशालाओं की व्यवस्था भी उसने अपने राज्य में की। वह अपने को प्रजा का सेवक समझता था और हर समय उनकी सेवा को तत्पर रहता। इसके शासन काल में देश में न तो कोई विदेशी आक्रमण हुआ और न ही आन्तरिक संकट उत्पन्न हुआ। पड़ोसी देशों के साथ इसका सम्बंध मैत्रीपूर्ण

बना रहा।

अंत में निष्कर्ष के तौर पर हम यही कहेंगे कि अशोक की गणना विश्व की महानतम विभूतियों में की जाती है। उसकी तुलना अकबर, सीजर, नेपोलियन आदि से की जाती है। लेकिन अशोक इन सबों से महान था। वह एक कर्तव्यपरायण राजा था। अपने कर्तव्य को पूरा करने के लिए इसने अपने व्यक्तिगत सुख का भी त्याग कर दिया। अपनी विजय के उपरान्त युद्ध घोष को धर्म घोष में परिणत करने वाला यह महान सम्राट था। उसने धर्म विजय का सफल प्रयास किया। विश्व के इतिहास में यह प्रयास एक नवीन उदाहरण था। धर्म प्रचारक के रूप में रेले "गौरीशंकर का गगन चुम्बी शिखर" मानना अनुचित नहीं होगा। भारत की स्वतंत्र सरकार ने सारनाथ स्थित अशोक स्तम्भ को राष्ट्रीय चिन्ह के रूप में लेकर

के रूप में प्रतिबिंबित कर इसकी
महानता को चार चाँद लगा दिया है)

Scanned with CamScanner